NAAC 2021/ Metrics Level Deviations/Cr3-3 Date:- 21/07/2021

Criteria 3.2.2:	Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/ international conference proceedings per teacher during last five years
Findings of DVV	Please provide as per SOP scanned images of 1. tabulated list of books or published papers by contributing in Conference proceedings with ISSN numbers, showing sl. no., name of book/proceedings, name of author, month and year, name of publisher, edition, for each year, for all the 5 assessment years, in readable form in English letter types and not in other languages, attested by the Principal. 2. cover page, content page and first page of the publication for all the last five assessment years attested by Principal. 3. Please provide web-link of research papers by title, author, Department/ School/ Division/ Centre/ Unit/ Cell, name and year of publication for all the 5 assessment years. 4. please provide supporting documents for the validation and verification.
Response/ Clarification	1) Tabulated list of books or published papers by contributing in Conference proceedings with ISSN numbers, showing sl. no., name of book/proceedings, name of author, month and year, name of publisher, edition, for each year, for all the 5 assessment years. **(Appendix-I)** 2) cover page, content page and first page of the publication for all the last five assessment years attested by Principal is attached **(Appendix-II)**

Cr-3 Coordinator

IQAC Coordinator

IQAC-COORDINATOR
Bhagwan Aadinath Collage of Education
Maharra-Lalitpur

Principal

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन,
महर्रा, ललितपुर (उ०प्र०)

Appendix-I

BACE
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
ग्राम-महर्रा, जनपद-ललितपुर (उ. प्र.)
Mob- 09453675775

3.2.2 Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/ international conference proceedings per teacher during last five years (10)

Sl. No.	Name of the teacher	Title of the book/chapters published	Title of the paper	Title of the proceedings of the conference	Name of the conference	National / International	Year of publication
1	Dr.Rohit Kuamr	गुणवत्तापूर्ण शिक्षण हेतु शिक्षक शिक्षा	शारीरिक शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा	गुणवत्तापूर्ण शिक्षण हेतु शिक्षक शिक्षा(राष्ट्रीय संविमर्श)–रीना पब्लिकेशन उज्जैन	गुणवत्तापूर्ण शिक्षण हेतु शिक्षक शिक्षा .	National	2015-16
2	Dr. Sunil kumar jain	शैक्षिक मूल्याकंन, कियात्मक शोध एवं नवाचार	NA	NA	NA	National	2017-18
3	Dr. Sunil kumar jain	प्रारम्भिक शिक्षा के नवीन प्रयास	NA	NA	NA	National	2018-19
4	Rakesh kumar	शिक्षण अधिगम के शिक्षन्त	NA	NA	NA	National	2018-19
5	Rakesh kumar	वर्तमान भारतीय समाज एवं प्रारम्भिक शिक्षा	NA	NA	NA	National	2018-19
6	Ashwani kumar jain	गणित शिक्षण	NA	NA	NA	National	2018-19
7	Ashwani kumar jain	शैक्षिक मूल्याकंन, कियात्मक शोध एवं नवाचार	NA	NA	NA	National	2018-19
8	Dr. Sunil kumar jain	वर्तमान भारतीय समाज एवं प्रारम्भिक शिक्षा	NA	NA	NA	National	2018-19
9	Dr.Rohit Kuamr	हिन्दी शिक्षण	NA	NA	NA	National	2018-19
10	Ram Pratap Viswakarma	शिक्षा के दार्शनिक एव समाज शास्त्रीय आधार	NA	NA	NA	National	2019-20
11	Rajesh Kumar Yadav	शिक्षा के दार्शनिक एव समाज शास्त्रीय आधार	NA	NA	NA	National	2019-20
12	Dr.Rohit Kuamr	माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि,व्यक्तित्व और नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन	NA	NA	NA	National	2019-20

13	Dr.Rohit Kuamr	स्वतत्रंता के पश्चात भारत में गठित शिक्षा आयोग एवं उनकें सुझाव	NA	NA	NA	National	2019-20
14	Dr.Rohit Kuamr	अंग्रेजी शासनकाल में भारत में शिक्षा का प्रसार	NA	NA	NA	National	2019-20

I.Q.A.C. Coordinator
IQAC-COORDINATOR
Bhagwan Aadinath Collage of Education
Maharra-Lalitpur

Bhagwan Aadinath College Of Education * Lalitpur * Principal

Principal
प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
महरा, ललितपुर (उ०प्र०)

Appendix-II

Academic Year 2015-16

गुणवत्तापूर्ण शिक्षण हेतु शिक्षक शिक्षा

(प्रस्तावित राष्ट्रीय शिक्षा नीति के परिप्रेक्ष्य में)

सिखाने के लिये पढ़े

पढ़ाने के लिए सीखें

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
महरौनी, ललितपुर (उ०प्र०)

डॉ. अरुण प्रकाश पाण्डेय
डॉ. राजेश साकोरीकर

ISBN : ISBN NO. 978-81-934175-7-7

गुणवत्तापूर्ण शिक्षण हेतु शिक्षक शिक्षा
gunvattapurna shikshan hetu shikshak shiksha

© शासकीय स्नातकोत्तर शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

2019

प्रकाशक

रीना पब्लिकेशन्स
14/1, सी-सेक्टर, सार्थक नगर, नानाखेड़ा,
उज्जैन (म.प्र.) 456010

मुद्रक
क्वालिटी ऑफसेट्स
19, तात्या टोपे मार्ग, फ्रीगंज, उज्जैन
मोबाईल 9893069922

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
मईरा, ललितपुर (उ०प्र०)

No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying, recording or by any information storage and retrieval system without [illegible]

शारीरिक शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा

रोहित कुमार
डॉ. राजेश साकोरीकर

शिक्षक और विद्यार्थी एक ही सिक्के के दो पहलु है। दोनों के आपसी तालमेल से ही शिक्षा रूपी गाडी आगे बढती है और सीखने और सिखाने की इस निरन्तर चलने वाली क्रिया मे शिक्षक का स्थान श्रेष्ठ है इसी लिए हमारी संस्कृति मे शिक्षक को ईश्वर से भी ऊँचा स्थान प्रदान किया गया है।

शिक्षक के पास वे सारे गुण होने आवश्यक है जिससे वह छात्रों को व्यक्तिगत ,शारीरिक, सामाजिक एवं मानसिक विकास कर सके।

बिना पूर्व अभ्यास के शिक्षक को अध्यापन करना उचित नही क्योंकि भविष्य के समाज का सृजनकर्ता शिक्षक माना गया है। अतः शिक्षक को चाहिए कि पढाने से पहले तथ्यों को एकत्रित करें । इसलिए शिक्षक शिक्षार्थी के लिए आवश्यक है कि शारीरिक शिक्षा देने से पूर्व उसे भी शारीरिक शिक्षा का ज्ञान होना चाहिए ताकि वह भविष्य मे वह अपने नाम के अनुरूप काम कर सके।

शिक्षा का तात्पर्य व्यक्ति की समस्त आंतरिक शक्तियों को विकास करना है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य का प्रथम कर्तव्य है अपने शरीर को स्वस्थ्य रखना।स्वस्थ्य शरीर को जीवन की सबसे बडी पूँजी कहा जाता है। शिक्षा के माध्यम से प्रत्येक मनुष्य अच्छे और बुरे मे अंतर करना सीखता है। प्राचीनकाल से ही शारीरिक शिक्षा व स्वास्थ्य को महत्व दिया जाता रहा है । परन्तु प्राचीन काल मे शारीरिक शिक्षा का उद्देश्य केवल मासपेशियों का विकास करना ही था ताकि वह अपने दैनिक आवश्यकता के कार्य जैसे भार उठाना ,पेड पर चढना, नदी मे छलाँग लगाना आदि कार्य कर सके परन्तु जैसे जैसे सभ्यता का विकास होता गया वैसे -वैसे इसके उद्देश्य और क्षेत्र बढते गये। आज वर्तमान समय में शारीरिक शिक्षा में खेलकूद, व्यायाम, मनोरंजन आदि सम्मिलित है। हमारे पूर्वज कहा करते थे कि स्वस्थ्य शरीर मे स्वस्थ्य मस्तिष्क निवास करता है। यदि शरीर ही स्वस्थ्य नही है तो शिक्षा प्रदान करना व्यर्थ हैं । इसी को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षक शिक्षा में शारीरिक शिक्षा को सम्मिलित किया गया है।

शारीरिक शिक्षा को शिक्षक शिक्षा से साथ जोडने का मुख्य उद्देश्य लोकतांत्रिक सामाजिक व्यवस्था मे आदर्श नागरिकों का निमार्ण करना है। आज के बदलते परिवेश मे मानव जीवन अति प्रतिस्पर्धा पूर्ण हो गया है। जिसके परिणामस्वरूप वह अपने स्वयं के लिए समय नही निकाल पाता है। जिसका परिणाम विभिन्न प्रकार के रोगों से आज का मानव संघर्ष कर रहा है। आज मधुमेह, रक्तचाप, मोटापा जैसी बीमारियाँ आम सी हो गयी है। समाज में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता एवं उसके प्रति जागृति उत्पन्न करने कार्य केवल दो लोगों के कन्धो पर प्रतीत होता है। एक सरकार का स्वास्थ्य विभाग और दूसरा शिक्षक।

इसलिए प्रशिक्षित शिक्षार्थी को जितनी शिक्षण विधिओं के अध्ययन की आवश्यकता है, उतनी ही शारीरिक शिक्षा की भी है। शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के शारीरिक शिक्षा को सम्मिलित करना उतना ही आवश्यक है कि जितना शिक्षण सिद्धांतों को।

एक शिक्षक राष्ट्र का निमार्णकर्ता होता है। शिक्षक ही आने वाली पीढी को तैयार करता है। स्वास्थ्य को सबसे बडा धन माना गया है। एक स्वस्थ्य पीढी को तैयार करने दायित्व शिक्षक के कंधो पर है। इसलिए शिक्षक पाठक्रम मे योग शिक्षा ,स्वास्थ्य शिक्षा आदि को सम्मिलित किया जाना आवश्यक है। ताकि शिक्षक शिक्षार्थी अपने को तो स्वस्थ्य रख ही सके बल्कि आने वाले समय मे अपने विद्यार्थियो तैयार कर सकें।

यदि शिक्षा प्रदान करने वाला शिक्षक ही स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा से अनिभिज्ञ होगें तो आनें वाले समय में अपने विद्यार्थियों को किस प्रकार से स्वास्थ्य और भविष्य में आने वाली चुनौतीयों के लिए तैयार कर सकेगें । इन सभी बातो को और भविष्य मे आने वाली चुनौतिओं का सामना करने के लिए हमें शिक्षक को शारीरिक शिक्षा की आवश्यकता एवं उसके महात्व के बारे मे प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है ।

शारीरिक शिक्षा का उद्देश्य न केवल स्वास्थ्य का विकास करना है बल्कि प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से आने वाली पीढी के शिक्षकों को भावी समय के लिए तैयार करना है। जिससे उनमे मानसिक, सामाजिक, भावानात्मक, आध्यात्मिक बौद्धिक, चारित्रिक, सांस्कृतिक एवं लोकतान्त्रिक विकास हो सकें। शारीरिक शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों और शिक्षकों के सामंजस्य स्थापित कर सकें। शारीरिक शिक्षा कार्यक्रमों के अर्न्तगत विद्यालयों में समय समय खेलों का आयोजन किया जाता है जिससे सामाजिकता का विकास होता है। और विद्यार्थियों के बीच राष्ट्रियता को विकास होता है।

भारत की लगभग ६० प्रतिशत जनसंख्या युवा है। [illegible] युवा संख्या

आज के समय [illegible] से सबसे जवान देश है।

उपयोग करके देश को विकसित राष्ट्रों की श्रेणी मे लाना हमारे लिए सबसे बडी चुनौती है। जिसकी सम्पूर्ण जिम्मेदारी शिक्षकों की है। इस कार्य को पूरा करनें के लिए हम सबको मिलकर प्रयास करना होगा। हमारे बीच राष्ट्रीय भावना का विकास करना सबसे बडी चुनौती होगी। जिसमें राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किये जाने वाले खेल आदि महात्वपूर्ण भूमिका निभाते है। इसके लिए सभी स्तरों पर स्वास्थ्य शिक्षा और शारीरिक शिक्षा अनिवार्य रूप से पाठ्यक्रम में सम्मिलित कर दी गई है।

मैं आशा करता हूँ कि हमारा भविष्य सुखद होगा और आने वाले समय मे सार्थक परिणाम समाने आयेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ-

1. शारीरिक शिक्षा स्वास्थ्य एवं योग लेखक डॉ. मनीष कुमार दुबे, डॉ. अंशु शर्मा

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
मड़ावरा, ललितपुर (उ०प्र०)

Academic Year

2017-18

Publications
Igniting Minds

D.El.Ed. (II Year III Sem)

शैक्षिक मूल्यांकन, क्रियात्मक शोध एवं नवाचार

वर्ष 2017 से लागू डी. एल. एड.
(पूर्व में बी.टी.सी.) पाठ्यक्रम के अनुसार

महेन्द्रनाथ श्रीवास्तव | डॉ. सुनील कुमार जैन | अश्विनी कुमार जैन

प्राचार्य
आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
ललितपुर (उ.प्र.)

डी.एल.एड. तृतीय सेमेस्टर की पुस्तकें

शैक्षिक मूल्यांकन, क्रियात्मक शोध एवं नवाचार	महेन्द्रनाथ श्रीवास्तव / डॉ. सुनील कुमार / अश्विनी कुमार जैन	80/-
समावेशी शिक्षा एवं विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा निर्देशन एवं परामर्श	महेन्द्रनाथ श्रीवास्तव / आर. एन. सिंह	80/-
विज्ञान शिक्षण	एस.के. टंडन	80/-
गणित शिक्षण	निधि पाराशर	80/-
सामाजिक अध्ययन शिक्षण	सुहानी शर्मा	120/-
हिन्दी शिक्षण	आभा गुप्ता	80/-
संस्कृत शिक्षण	नीतू टंडन	80/-
कम्प्यूटर शिक्षण	निहारिका चौहान	80/-

डी.एल.एड. गाइड

बी. टी. सी. दिग्दर्शन (1st Sem.)	पाठक | सत्संगी | सुखिया	350/-
बी. टी. सी. दिग्दर्शन (2nd Sem.)	सत्संगी | शर्मा	350/-
बी. टी. सी. दिग्दर्शन (3rd Sem.)	सत्संगी | शर्मा	350/-
बी. टी. सी. दिग्दर्शन (4th Sem.)		In Press/-

डी.एल.एड. श्योर सक्सेज सीरीज

बी. टी. सी. श्योर सक्सेज सरीज (1st Sem.)	सत्संगी | शर्मा	140/-
बी. टी. सी. श्योर सक्सेज सरीज (2nd Sem.)	सत्संगी | शर्मा	120/-
बी. टी. सी. श्योर सक्सेज सरीज (3rd Sem.)	सत्संगी | शर्मा	150/-
बी. टी. सी. दिग्दर्शन (4th Sem.)		In Press/-

शैक्षिक मूल्यांकन, क्रियात्मक शोध एवं नवाचार

महेन्द्रनाथ श्रीवास्तव | डॉ. सुनील कुमार अश्विनी कुमार जैन

ISBN : 978-93-85079-33-7

9 789385 079337

₹ 80.00

Agrawal Publications
Igniting Minds

ED675

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
महरौनी, ललितपुर (उ०प्र०)

शैक्षिक मूल्यांकन, क्रियात्मक शोध एवं नवाचार

वर्ष 2017 से लागू डी. एल. एड. (पूर्व में बी. टी. सी.) पाठ्यक्रमानुसार

महेन्द्रनाथ श्रीवास्तव
एम. ए. (समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान), बी. टी. सी., एम. एड.
पद प्रवक्ता
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, प्रयागपुर, बहराइच

•

डॉ. सुनील कुमार जैन
एम. ए. (हिन्दी), एम. कॉम., एम. एड., पी-एच. डी.
प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन, ललितपुर

•

अश्विनी कुमार जैन
एम. एस-सी. (गणित), एम. ए. (शिक्षाशास्त्र), यू.जी.सी., नेट (शिक्षाशास्त्र), सी. एफ.सी., डी. पी. एच.
प्रवक्ता
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजूकेशन, ललितपुर, उ. प्र.

Aφ®

अग्रवाल पब्लिकेशन्स®

[ISO : 9001 : 2008 Certified Company]

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
मड़ैरा, ललितपुर (उ०प्र०)

Academic Year
2018-19

Agrawal
Publications
Igniting Minds !

Revised Edition

D.El.Ed. (I Year II Sem)

प्रारम्भिक शिक्षा के नवीन प्रयास

वर्ष 2017 से लागू डी. एल. एड.
(पूर्व में बी.टी.सी.) पाठ्यक्रम के अनुसार

महेन्द्रनाथ श्रीवास्तव | डॉ. सुनील कुमार जैन

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
महरौनी, ललितपुर (उ०प्र०)

[illegible]रम्भिक शिक्षा के नवीन प्रयास

[illegible] 2017 से लागू डी. एल. एड. (पूर्व में बी. टी. सी.)
पाठ्यक्रमानुसार

BHAGWAN AADINATH COLLEGE OF EDUCATION
ACC. No.- 10087
VILL. MAHRRA, LALITPUR

लेखकगण

महेन्द्रनाथ श्रीवास्तव
[illegible]शास्त्र, राजनीति विज्ञान), बी. टी. सी., एम. एड.
पद प्रवक्ता
[illegible] एवं प्रशिक्षण संस्थान, प्रयागपुर, बहराइच

●

डॉ. सुनील कुमार जैन
[illegible] (हिन्दी), एम. कॉम., एम. एड., पी-एच. डी.
प्रवक्ता
[illegible] आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन, ललितपुर

Ap®
अग्रवाल पब्लिकेशन्स®
(ISO 9001 : 2008 CERTIFIED COMPANY)

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
मड़ावरा, ललितपुर (उ०प्र०)

डी.एल.एड. द्वितीय सेमेस्टर की पुस्तकें

वर्तमान भारतीय समाज एवं प्रारम्भिक शिक्षा	जैन/कुमार	130/-
प्रारम्भिक शिक्षा के नवीन प्रयास	महेन्द्रनाथ श्रीवास्तव / जैन	90/-
विज्ञान शिक्षण	प्रदीप कुलश्रेष्ठ	140/-
गणित शिक्षण	आशीष स्वरूप	100/-
सामाजिक अध्ययन शिक्षण	मृदुला राय	130/-
हिन्दी शिक्षण	शाही / शर्मा	90/-
Teaching of English	Sanjeev Saxena	95/-
समाजोपयोगी उत्पादक कार्य	डी.एन. श्रीवास्तव/दुर्गेश जोशी	100/-
कला शिक्षण	मंजरी राठौर	60/-
संगीत शिक्षण	नीतू टंडन	70/-
शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य	महेन्द्रनाथ श्रीवास्तव	75/-

डी.एल.एड. तृतीय सेमेस्टर की पुस्तकें

शैक्षिक मूल्यांकन, क्रियात्मक शोध एवं नवाचार	महेन्द्रनाथ श्रीवास्तव	70/-
समावेशी शिक्षा	महेन्द्रनाथ श्रीवास्तव	70/-
विज्ञान शिक्षण	एस.के. टंडन	70/-
गणित शिक्षण	निधि पाराशर	70/-
…जिक अध्ययन शिक्षण	सुहानी शर्मा	110/-
… शिक्षण	आभा गुप्ता	70/-
संस्कृत शिक्षण	नीतू टंडन	70/-
कम्प्यूटर शिक्षण	निहारिका चौहान	70/-

डी.एल.एड. गाइड

बी. टी. सी. दिग्दर्शन (1st Sem.)	पाठक | सत्संगी | सुखिया	350/-
बी. टी. सी. दिग्दर्शन (2nd Sem.)	सत्संगी | शर्मा	350/-
बी. टी. सी. दिग्दर्शन (3rd Sem.)	सत्संगी | शर्मा	350/-
बी. टी. सी. दिग्दर्शन (4th Sem.)		In Press/-

डी.एल.एड. श्योर सक्सेज सीरीज

बी. टी. सी. श्योर सक्सेज सरीज (1st Sem.)	सत्संगी | शर्मा	140/-
बी. टी. सी. श्योर सक्सेज सरीज (2nd Sem.)	सत्संगी | शर्मा	120/-
बी. टी. सी. श्योर सक्सेज सरीज (3rd Sem.)	सत्संगी | शर्मा	150/-
बी. टी. सी. दिग्दर्शन (4th Sem.)		In Press/-

AΦ®

AGRAWAL PUBLICATIONS®

H.O.: 28/115, Jyoti Block, Sanjay Place, Agra-2

email: agrawalpublication@gmail.com

Website: www.booksap.com

ED622

प्रारम्भिक शिक्षा के नवीन प्रयास

महेन्द्रनाथ श्रीवास्तव | डॉ. सुनील कुमार जैन

ISBN - 978-93-84134-37-2

9789384134372

प्राचार्य

भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन

महरा, ललितपुर (उ०प्र०)

front page

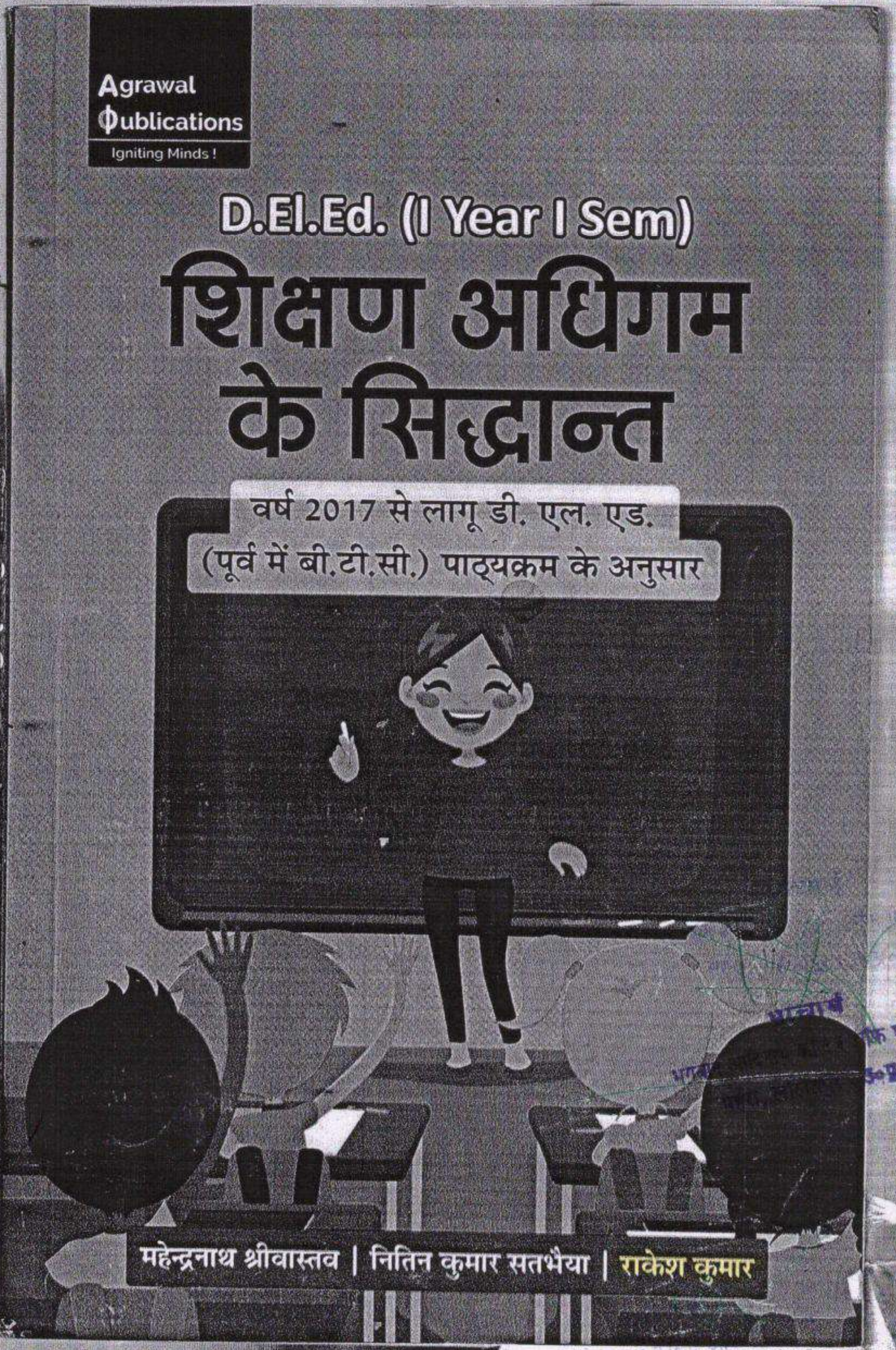

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
मईरा, ललितपुर (उ०प्र०)

शिक्षण अधिगम के सिद्धान्त

वर्ष 2017 से लागू D.El.Ed. (पूर्व में बी. टी. सी.)

पाठ्यक्रम के अनुसार

लेखकगण

महेन्द्रनाथ श्रीवास्तव

एम. ए. (समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान), बी. टी. सी., एम. एड.

•

नितिन कुमार सतभैया

एम. कॉम., एम. ए. (इतिहास), एम. एड., यू.जी.सी., नेट/जे.आर.एफ. (शिक्षाशास्त्र)

•

राकेश कुमार

एम. ए. (समाजशास्त्र एवं राजनीतिशास्त्र), एम. एड., यू.जी.सी., नेट/जे.आर.एफ., एम. फिल. (शिक्षाशास्त्र)

प्राचार्य

भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन

महरौनी, ललितपुर (उ०प्र०)

अग्रवाल पब्लिकेशन्स®

(ISO 9001 : 2008 CERTIFIED COMPANY)

Publishers

AGRAWAL PUBLICATIONS ®

Head Office : 28/115, Jyoti Block, Sanjay Place, Agra-2
Telefax : +91 562 2523949, 4032383 Mob. +91 9837079920
e-mail : agrawalpublication@gmail.com
website : www.booksap.com

All rights reserved. No part of this work may be reproduced, transcribed or used in any form or by any means— graphic, electronic, or mechanical, including photocopying, recording, taping, Web distribution, or information storage and/or retrieval systems—without the prior written permission of the publisher.

© All rights reserved

Latest Edition
Price : Rs. 65.00

ISBN : 978-93-80510-42-2

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
महैरा, ललितपुर (उ०प्र०)

Laser Typesetting : Ikon Computers, Agra
Printed at : Aaryan Printers, Agra

शिक्षा प्रक्रिया का लक्ष्य छ
सार्वभौमिक व आजीवन चलने वा
बालक के व्यवहार में रचनात्
सीखना (Learning) कहते है, जो
कैसा व्यवहार करता है या बालक
प्रक्रिया, विद्या के सुनिश्चयन हेतु वि
सिद्धान्त कहा जाता है। इसमें शिक्ष
संलग्नता दर्शाता है। अध्यापक व छा
प्रक्रिया को पूरी करते हैं। समय व
प्रक्रिया प्रभावित हुई है—परम्परागत शि
विधियों की खोज हुई है, जिसमें
दृश्य-श्रव्य सामग्री का प्रयोग प्रारम्भ
लिए अपरिहार्य है। जिसे इस पुस्तक

इस पुस्तक के अध्ययन से बी.
नवीन विधाओं एवं कौशलों का ज्ञा
अधिगम के लिए सहायक सामग्री का
की सम्प्राप्ति कराने में दक्ष होंगे। साथ
में सफल होंगे।

यह पुस्तक उ. प्र. में शिक्षकों के
प्रथम सेमेस्टर में वर्णित "शिक्षण अधि
रखकर लिखी गयी है, जिसमें अपने
अनुभव का समावेश किया है। साथ ही
सरकारी अभिलेखों, प्रपत्रों, फोल्डरों अ
कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

पुस्तक लेखन में श्री सोमनाथ चौ
स. अ. श्रावस्ती ने सहयोग किया है, इन
अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा के व्यव
कर्मियों को साधुवाद देता हूँ, जिन्होंने पु

Agrawal Publications
Igniting Minds!

Revised Edition

D.El.Ed. (I Year II Sem)

वर्तमान भारतीय समाज एवं प्रारम्भिक शिक्षा

वर्ष 2017 से लागू डी. एल. एड.
(पूर्व में बी.टी.सी.) पाठ्यक्रम के अनुसार

[redacted]

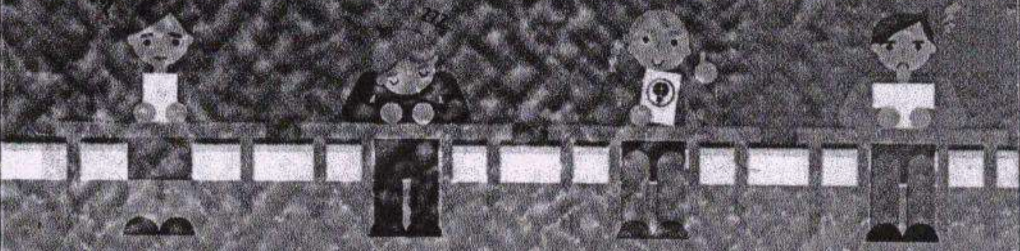

डॉ. सुनील कुमार जैन | डॉ. राकेश कुमार

प्राचार्य

वर्तमान भारतीय समाज एवं प्रारम्भिक शिक्षा

वर्ष 2017 से लागू डी. एल. एड. (पूर्व में बी. टी. सी.)
पाठ्यक्रमानुसार

SPECIMAN COPY

लेखकगण

डॉ. सुनील कुमार जैन
एम. ए. (हिन्दी), एम. कॉम., एम. एड., पी-एच. डी.
प्रवक्ता
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन, ललितपुर

●

डॉ. राकेश कुमार
एम. ए. (समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान), एम. एड., यू. जी. सी. नेट (एजुकेशन)
प्रवक्ता
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन, ललितपुर

अग्रवाल पब्लिकेशन्स®
(ISO 9001 : 2008 CERTIFIED COMPANY)

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
महरौनी, ललितपुर (उ०प्र०)

(8)

Agrawal Publications
Igniting Minds!

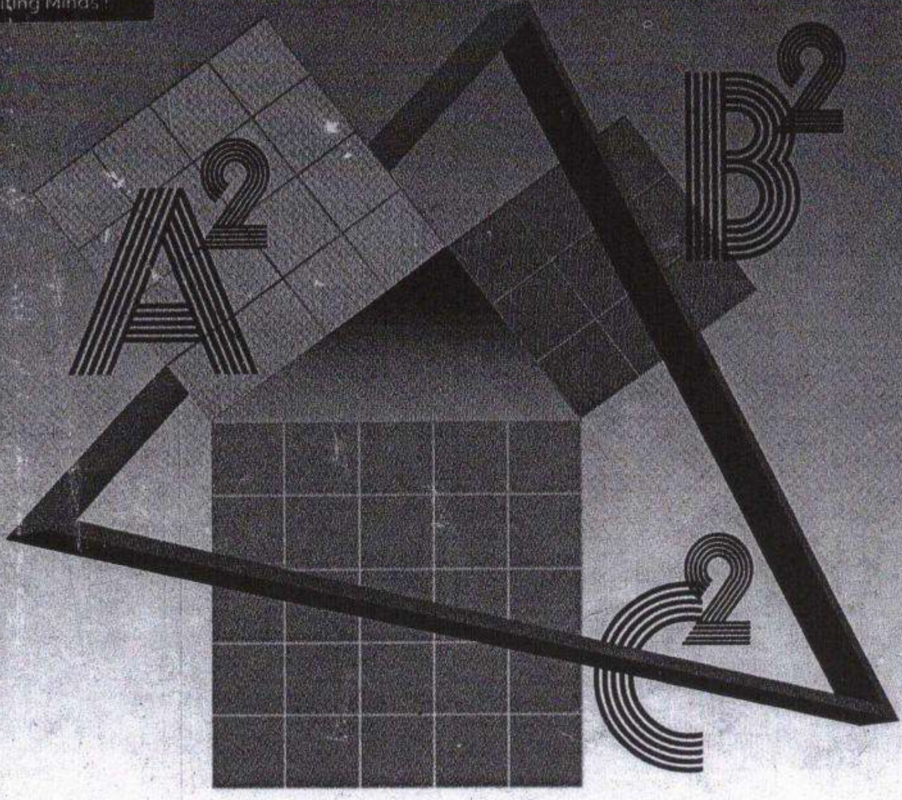

D.El.Ed. (I Year I Sem)

गणित शिक्षण

वर्ष 2017 से लागू डी. एल. एड.
(पूर्व में बी.टी.सी.) पाठ्यक्रम के अनुसार

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ ए[illegible]शन
मर्हरा, ललितपुर (उ०प्र०)

अश्विनी कुमार जैन

[illegible]	[illegible]	[illegible]
ED974	शिक्षण अधिगम के सिद्धान्त	[illegible]
ED975	विज्ञान शिक्षण	मंजरी राठौर
ED976	गणित शिक्षण	अश्विनी कुमार जैन
ED977	सामाजिक अध्ययन शिक्षण	सुशील कुमार शुक्ला
ED978	हिन्दी शिक्षण	अल्का मिश्रा
ED979	कम्प्यूटर शिक्षा	एस.के. नारंग | एम.के. अमन
ED980	संस्कृत शिक्षण	अनिल कुमार शुक्ल
ED613	कला शिक्षण	मंजरी राठोर
ED607	संगीत शिक्षण	नीतू टंडन
ED400	शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य	महेन्द्रनाथ श्रीवास्तव

डी.एल.एड. द्वितीय सेमेस्टर की पुस्तकें

ED621	वर्तमान भारतीय समाज एवं प्रारम्भिक शिक्षा	जैन/कुमार
ED622	प्रारम्भिक शिक्षा के नवीन प्रयास	महेन्दनाथ श्रीवास्तव / जैन
ED615	विज्ञान शिक्षण	प्रदीप कुलश्रेष्ठ
ED616	गणित शिक्षण	आशीष स्वरूप
ED617	सामाजिक अध्ययन शिक्षण	मृदुला राय
ED618	हिन्दी शिक्षण	शाही / शर्मा
ED619	Teaching of English	Hena Siddique
ED620	समाजोपयोगी उत्पादक कार्य	डी.एन. श्रीवास्तव/दुर्गेश जोशी

अन्य उपयोगी प्रकाशन

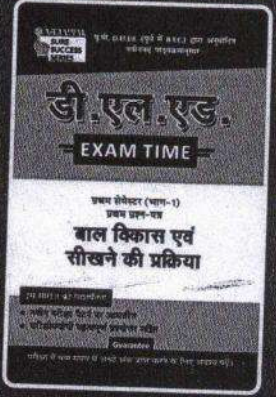

AΦ®

AGRAWAL PUBLICATIONS®
H.O.: 28/115, Jyoti Block, Sanjay Place, Agra-2
email: agrawalpublication@gmail.com
Website: www.booksap.com

ED976

गणित शिक्षण
अश्विनी कुमार जैन
ISBN - 978-93-83229-60-4
₹ 70

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
महरा, ललितपुर (उ०प्र०)

गणित शिक्षण
[TEACHING OF MATHEMATICS]

वर्ष 2017 से लागू डी. एल. एड. (पूर्व में बी. टी. सी.) पाठ्यक्रमानुसार

BHAGWAN AADINATH COLLEGE OF EDUCATION
ACC. No. 10097
VILL. MAHRRA, LALITPUR

लेखक
अश्विनी कुमार जैन
एम. एस-सी. (गणित), एम. ए. (शिक्षाशास्त्र), यू.जी.सी., नेट (शिक्षाशास्त्र),
सी. एफ.सी., डी. पी. एच.
प्रोफेसर
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजूकेशन, ललितपुर
उ. प्र.

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
महरा, ललितपुर (उ०प्र०)

अग्रवाल पब्लिकेशन्स®
(ISO : 9001 : 2008 CERTIFIED COMPANY)

डी.एल.एड. तृतीय सेमेस्टर की पुस्तकें

डी.एल.एड. गाइड

डी.एल.एड. श्योर सक्सेज सीरीज

Agrawal
Publications

9 789385 079337

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
महरौनी, ललितपुर (उ०प्र०)

शैक्षिक मूल्यांकन, क्रियात्मक शोध एवं नवाचार

वर्ष 2017 से लागू डी. एल. एड. (पूर्व में बी. टी. सी.) पाठ्यक्रमानुसार

महेन्द्रनाथ श्रीवास्तव
एम. ए. (समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान), बी. टी. सी., एम. एड.
पद प्रवक्ता
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, प्रयागपुर, बहराइच

डॉ. सुनील कुमार जैन
एम. ए. (हिन्दी), एम. कॉम., एम. एड., पी-एच. डी.
प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन, ललितपुर

अश्विनी कुमार जैन
एम. एस-सी. (गणित), एम. ए. (शिक्षाशास्त्र), यू.जी.सी., नेट (शिक्षाशास्त्र),
सी. एफ.सी., डी. पी. एच.
प्रवक्ता
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजूकेशन, ललितपुर, उ. प्र.

अग्रवाल पब्लिकेशन्स®
[ISO : 9001 : 2008 Certified Company]

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
महरौनी, ललितपुर (उ०प्र०)

Agrawal Publications
Igniting Minds!

Revised Edition

D.El.Ed. (I Year II Sem)

वर्तमान भारतीय समाज एवं प्रारम्भिक शिक्षा

वर्ष 2017 से लागू डी. एल. एड.
(पूर्व में बी.टी.सी.) पाठ्यक्रम के अनुसार

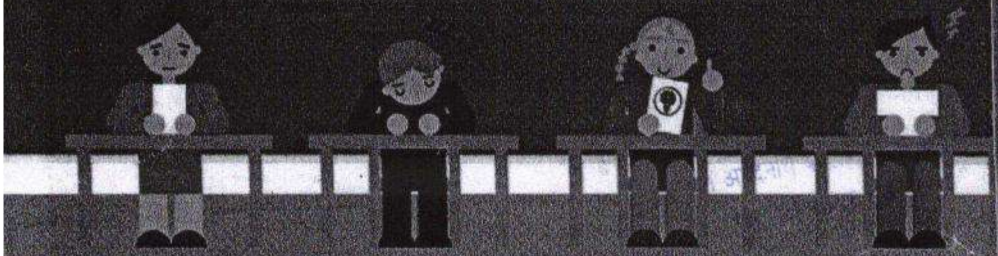

डॉ. सुनील कुमार जैन | डॉ. राकेश कुमार

प्राचार्य
ललितपुर (उ०प्र०)

वर्तमान भारतीय समाज एवं प्रारम्भिक शिक्षा

वर्ष 2017 से लागू डी. एल. एड. (पूर्व में बी. टी. सी.) पाठ्यक्रमानुसार

SPECIMAN CO.

लेखकगण

डॉ. सुनील कुमार जैन
एम. ए. (हिन्दी), एम. कॉम., एम. एड., पी-एच. डी.
प्रवक्ता
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन, ललितपुर

•

डॉ. राकेश कुमार
एम. ए. (समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान), एम. एड., यू. जी. सी. नेट (एजुकेशन)
प्रवक्ता
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन, ललितपुर

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
ललितपुर (उ०प्र०)

अग्रवाल पब्लिकेशन्स®
(ISO 9001 : 2008 CERTIFIED COMPANY)

डी.एल.एड. द्वितीय सेमेस्टर की पुस्तकें

वर्तमान भारतीय समाज एवं प्रारम्भिक शिक्षा	जैन/कुमार	1
प्रारम्भिक शिक्षा के नवीन प्रयास	महेन्द्रनाथ श्रीवास्तव / जैन	9
विज्ञान शिक्षण	प्रदीप कुलश्रेष्ठ	1
गणित शिक्षण	आशीष स्वरूप	1
सामाजिक अध्ययन शिक्षण	मृदुला राय	1
हिन्दी शिक्षण	शाही / शर्मा	9
Teaching of English	Sanjeev Saxena	95
समाजोपयोगी उत्पादक कार्य	डी.एन. श्रीवास्तव/दुर्गेश जोशी	10
कला शिक्षण	मंजरी राठोर	60
संगीत शिक्षण	नीतू टंडन	70
शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य	महेन्द्रनाथ श्रीवास्तव	75

डी.एल.एड. तृतीय सेमेस्टर की पुस्तकें

शैक्षिक मूल्यांकन, क्रियात्मक शोध एवं नवाचार	महेन्द्रनाथ श्रीवास्तव	70/
समावेशी शिक्षा	महेन्द्रनाथ श्रीवास्तव	70/
विज्ञान शिक्षण	एस.के. टंडन	70/
गणित शिक्षण	निधि पाराशर	70/
सामाजिक अध्ययन शिक्षण	सुहानी शर्मा	110
शिक्षण	आभा गुप्ता	70/
कृत शिक्षण	नीतू टंडन	70/-
कम्प्यूटर शिक्षण	निहारिका चौहान	70/-

डी.एल.एड. गाइड

बी. टी. सी. दिग्दर्शन (1st Sem.)	पाठक | सत्संगी | सुखिया	350/
बी. टी. सी. दिग्दर्शन (2nd Sem.)	सत्संगी | शर्मा	350/
बी. टी. सी. दिग्दर्शन (3rd Sem.)	सत्संगी | शर्मा	350/
बी. टी. सी. दिग्दर्शन (4th Sem.)		In Pre

डी.एल.एड. श्योर सक्सेज सीरीज

बी. टी. सी. श्योर सक्सेज सरीज (1st Sem.)	सत्संगी | शर्मा	140/-
बी. टी. सी. श्योर सक्सेज सरीज (2nd Sem.)	सत्संगी | शर्मा	120/-
बी. टी. सी. श्योर सक्सेज सरीज (3rd Sem.)	सत्संगी | शर्मा	150/-
बी. टी. सी. दिग्दर्शन (4th Sem.)		In Pres

AΦ®
AGRAWAL PUBLICATIONS®
H.O.: 28/115, Jyoti Block, Sanjay Place, Agra-2
email: agrawalpublication@gmail.com
Website: www.booksap.com

ED621

वर्तमान भारतीय समाज एव
प्रारम्भिक शिक्षा
डॉ. सुनील कुमार जैन | डॉ. राकेश कु
ISBN - 978-93-84134-36-5
9789384134365
₹ 130.00

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
महरा, ललितपुर (उ०प्र०)

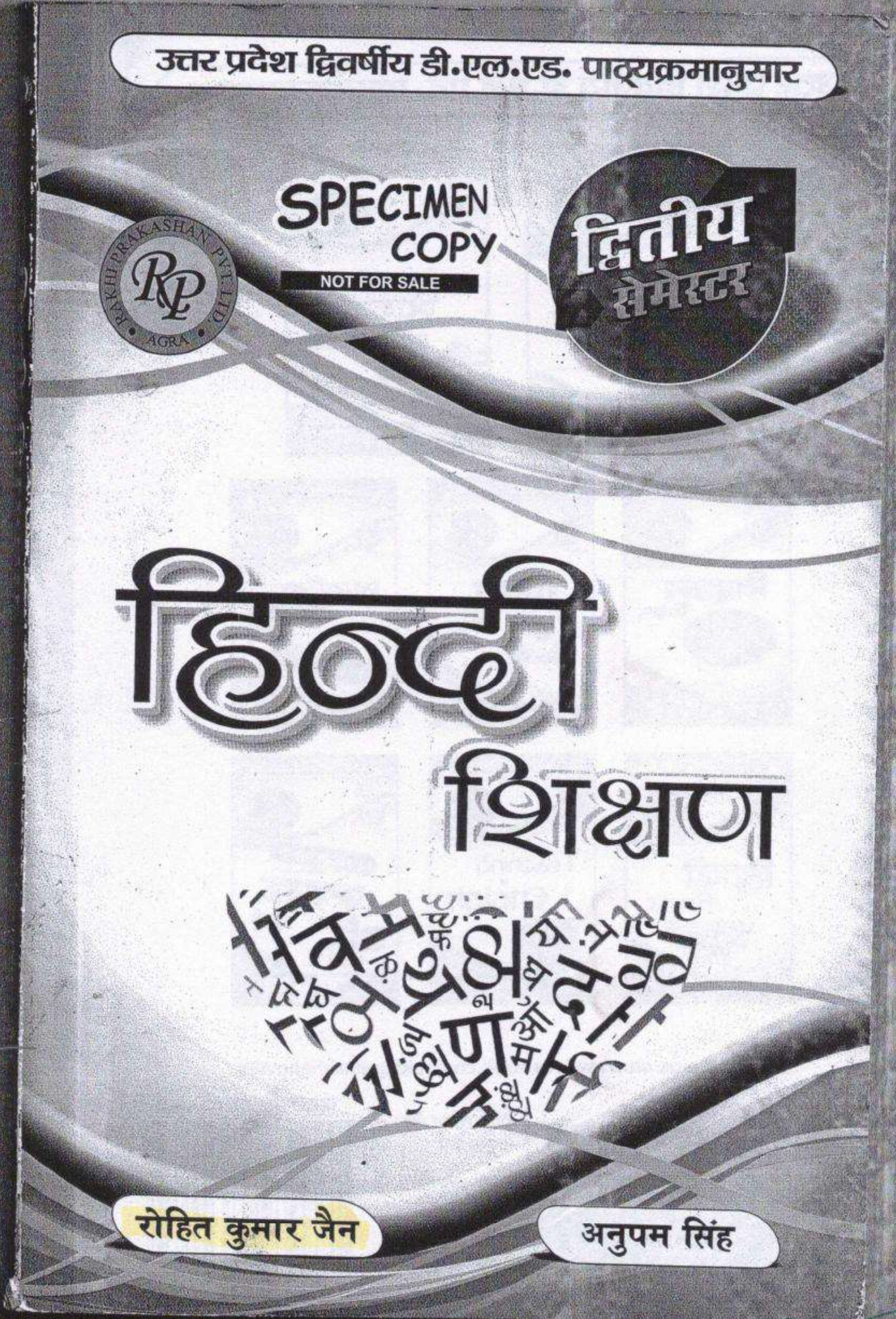

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
महरौनी, ललितपुर (उ०प्र०)

उ.प्र. राज्य शैक्षिक अनुसंधान परिषद् द्वारा निर्धारित
डी.एल.एड. पाठ्यक्रमानुसार

हिन्दी शिक्षण

(द्वितीय सेमेस्टर)

रोहित कुमार जैन
एम.ए. (हिन्दी, अंग्रेजी, अर्थशास्त्र),
एम.एड., (पी-एच.डी.)
प्राचार्य
आदिनाथ कॉलेज ऑफ एडूकेशन
महर्रा
ललितपुर (उ.प्र.)

एवं

अनुपम सिंह
एम.ए. (हिन्दी),
एम.एड., नेट
सेन्ट जोसेफ महिला महाविद्यालय
सिविल लाइन्स
गोरखपुर (उ.प्र.)

राखी प्रकाशन प्रा. लि.
12 A, चतुर्थ तल, रमन टॉवर, संजय प्लेस, आगरा-282 002

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
मड़ैरा, ललितपुर (उ०प्र०)

• इस पुस्तक का कोई भी भाग या अंश एवं प्रस्तुतीकरण का ढंग प्रकाशक की अनुमति लिए बिना छापना या मुद्रित करना कॉपीराइट अधिनियम के अन्तर्गत दण्डनीय अपराध होगा। इस पुस्तक के विचार पूर्णत: लेखकों के हैं। सम्पूर्ण सामग्री का कॉपीराइट प्रकाशकाधीन है।

• *वितरक :*

एच. पी. भार्गव बुक हाउस
यू.जी.-1, निर्मल हाइट्स,
हलवाई की बगीची, आगरा-मथुरा रोड,
आगरा-282 007

बालाजी बुक हाऊस
17, न्यू गोल मार्केट, महानगर
लखनऊ-226 007

विद्या पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
चन्द्रिका अपार्टमेन्ट, चन्द्रिका नगर
सिगरा, वाराणसी

• © *प्रकाशक*

• *प्रथम संस्करण :* **2018**

• *ISBN :* **978-93-87762-08-4**

• **मूल्य : ₹ 80/-**

• *प्रकाशक :* **राखी प्रकाशन प्रा. लि.** 12A, रमन टावर, संजय प्लेस, आगरा-282 002
Phone : 0562-2857458, E-mail : rakhiprakashan@yahoo.com

• *शब्द संयोजन :* **एस. के. प्रिन्टर्स,** सिकन्दरा, आगरा-282 007

प्रस्तावना

साहित्य का सृजन अनादिकाल से होता आ रहा है। मनुष्य उसका उपयोग कर सभ्यता के विकास पथ पर चल रहा है। शिक्षा के उद्देश्य-देश, काल और परिस्थितियों के अनुसार बदलते रहते हैं। शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में मातृभाषा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहती है।

प्रस्तुत पुस्तक ''हिन्दी शिक्षण'' डी.एल.एड. कार्यक्रम के द्वितीय सेमेस्टर के पाठ्यक्रम पर आधारित है। पुस्तक में पाठ्यक्रमानुसार प्रसंग, हिन्दी भषा उच्चारण, स्वतन्त्र अभिव्यक्ति, उपसर्ग, प्रत्यय, सामसिक पद, संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया विशेषण, मौन वाचन एवं पत्र लेखन पर प्रकाश डाला गया है।

आशा है पुस्तक डी.एल.एड. के प्रशिक्षुओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगी, पुस्तक के प्रकाशन के लिए लेखकगण राखी प्रकाशन प्रा. लि. के प्रबन्ध निदेशक श्री पियूष भार्गव को धन्यवाद देते हैं।

—लेखक

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कालेज ऑफ एजुकेशन
महरौनी, ललितपुर (उ०प्र०)

पाठ्यक्रम

हिन्दी

कक्षा शिक्षण : विषयवस्तु

- कहानी, लोककथा, रोचक प्रसंगों को ध्यानपूर्वक सुनना व याद करना।
- परिवेशीय विषयों, सामाजिक घटनाओं, स्वअनुभवों पर चर्चा।
- गद्य व पद्य के अंशों का शुद्ध उच्चारण, लय एवं उतार-चढ़ाव के साथ पढ़ना, बोलना।
- स्वतंत्र (मौखिक एवं लिखित) अभिव्यक्ति।
- स्तरानुसार गद्य-पद्य में शब्दों, वाक्यांशों, विराम चिन्हों एवं समान ध्वनियों को समझना।
- उपसर्ग, प्रत्यय, सामासिक पदों की पहचान व प्रयोग।
- संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया विशेषण, वचन, लिंग तथा काल को पहचानना।
- पाठ्यवस्तु का मौन वाचन करते हुए उसमें निहित विचारों, भावों एवं तथ्यों को समझना।
- शिक्षक के निर्देशानुसार छोटे-छोटे वाक्य लिखना।
- औपचारिक, अनौपचारिक पत्र लिखना।
- परिचित विषयों पर मौलिक रूप से लिखना।

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
महैरा, ललितपुर (उ०प्र०)

विषय-सूची

अध्याय *पृ. सं.*

1. **हिन्दी रोचक प्रसंगों को ध्यानपूर्वक सुनना** 1-9
भाषायी कौशलों का विकास—2, श्रवण कौशल का विकास कैसे किया जाय—4, कहानी एक लोककथा श्रवण—5, कहानी शिक्षण का महत्व—6, कहानी शिक्षण की उद्योतन सामग्री—7, कहानी शिक्षण के उद्देश्य—8, रोचक प्रसंग (यात्रावृतान्त)—8, उपयोगी प्रश्न—9

2. **परिवेशीय एवं सामाजिक विषयों व स्व अनुभवों पर चर्चा** 10-16
चर्चा के प्रकार—11, समूह चर्चा के उद्देश्य—12, चर्चा की संरचना—12, समूह चर्चा के लाभ—13, समूह चर्चा की हानियाँ या सीमाएँ—13, स्वअनुभव (आत्मकथा)—14, आत्मकथा लिखने के उद्देश्य—14, नदी की आत्मकथा—15, उपयोगी प्रश्न—16

3. **शुद्ध उच्चारण** 17-22
उच्चारण की शुद्धता का अर्थ—17, शुद्ध उच्चारण का महत्व—17, उच्चारण की सामान्य अशुद्धियाँ—18, अशुद्ध उच्चारण के कारण—19, उच्चारण सम्बन्धी अशुद्धियों को सुधारने के उपाय—21, उपयोगी प्रश्न—22

4. **स्वतंत्र (मौखिक एवं लिखित) अभिव्यक्ति** 23-30
अभिव्यक्ति के प्रकार—23, मौखिक अभिव्यक्ति का उद्देश्य—24, मौखिक अभिव्यक्ति की विशेषताएँ—24, मौखिक अभिव्यक्ति का महत्व—25, मौखिक अभिव्यक्ति-कौशल की शिक्षण विधियाँ—25, लिखित अभिव्यक्ति—27, लिखित अभिव्यक्ति के उद्देश्य—27, लिखित अभिव्यक्ति का महत्व—28, लिखित अभिव्यक्ति की उपयोगिता—29, सुलेख के प्रति उत्पन्न करने के उपाय—29, लिखित अभिव्यक्ति विकास की विधियाँ—29, उपयोगी प्रश्न—30

5. **हिन्दी भाषा का ध्वनि विज्ञान, रूप विज्ञान एवं वाक्य विज्ञान** 31-60
ध्वनि का अर्थ—31, हिन्दी शिक्षण में ध्वनि का प्रयोग—32, हिन्दी भाषा की उपप्रचलित ध्वनियाँ—33, उच्चारण स्थान एवं वर्णों का वर्गीकरण—35, हिन्दी

Academic Year 2019-20

शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार

राम प्रताप विश्वकर्मा
राजेश कुमार यादव

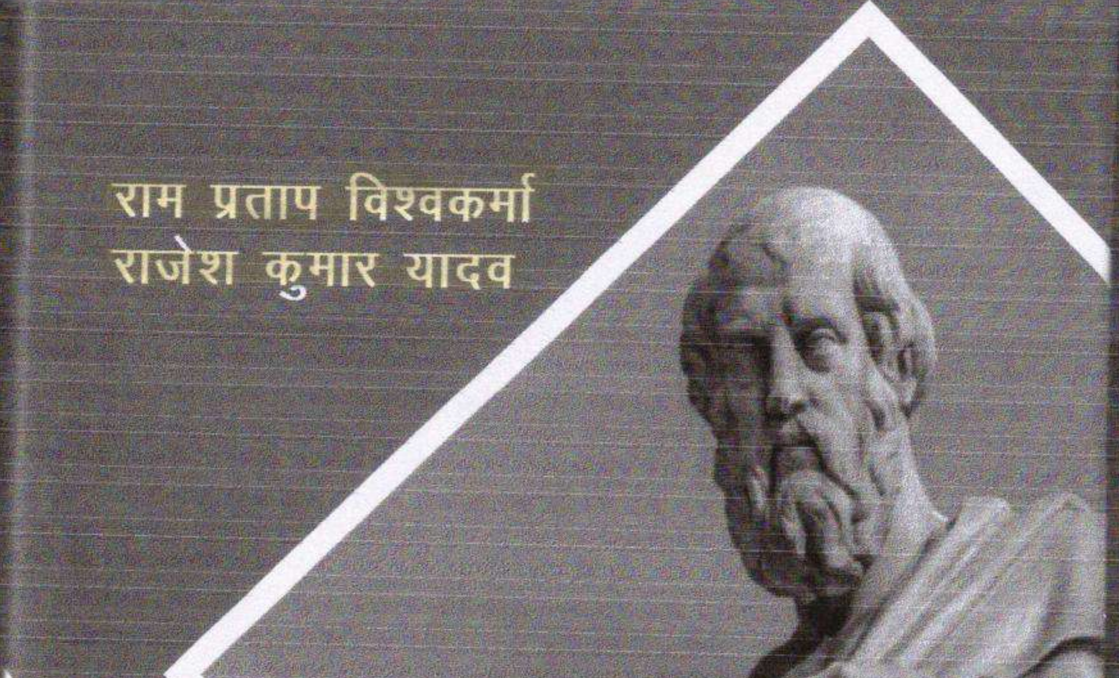

राम प्रताप विश्वकर्मा उत्तर प्रदेश प्रान्त के शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में एक चिर–परिचित नाम है। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के अम्बेडकर नगर जिले के छोटे से गाँव जफ्फरपुर सुकरौली में 2 फरवरी 1961 को हुआ। स्थानीय विद्यालयों में अपनी प्रारम्भिक व प्राथमिक शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात पं. दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर से वनस्पति विज्ञान में स्नातकोत्तर तथा वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर से शिक्षा निष्णात की उपाधि प्राप्त की।

राम प्रताप विश्वकर्मा ने प्रदेश के कई प्रतिष्ठित संस्थानो में अपने अध्यापन कार्य के साथ–साथ विविध पाठ्येत्तर गतिविधियों में अपना विशिष्ट योगदान दिया है। वर्तमान में बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी से सम्बद्ध ललितपुर के प्रमुख शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान–भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजूकेशन में बतौर प्रवक्ता पद पर अपनी सेवायें दे रहें हैं।

₹695/-

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
बर्हरा, ललितपुर (उ०प्र०)

राजेश कुमार यादव उत्तर प्रदेश प्रान्त के आजमगढ़ जनपद स्थित ग्राम राजापुर माफी में 15 जुलाई 1982 को एक किसान परिवार में जन्मे शिक्षक प्रशिक्षक अपने क्षेत्र में एक पहचाना हुआ व्यक्तित्व गिना जाता है। अपनी प्रारम्भिक शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु प्रयागराज (इलाहाबाद) प्रस्थान किया जहाँ से अर्थशास्त्र में अधिस्नातक की उपाधि प्राप्त की तथा छत्रपति शिवाजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर से शिक्षा में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की।

राजेश कुमार यादव ने अपने चिंतनशील, सृजनशील प्रवृति व कठिन परिश्रम के कारण प्रतिष्ठित शिक्षाविदों में अपना स्थान स्थापित करने में सफल रहें हैं।

सम्प्रति–वर्तमान में राजेश कुमार यादव ललितपुर के प्रतिष्ठित संस्थान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजूकेशन में बतौर प्रवक्ता (असिस्टेंट प्रोफेसर) अपनी सेवायें दे रहें हैं।

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
मड़ावरा, ललितपुर (उ०प्र०)

मदद ली गई है, हम उन
आशा करते हैं कि पुस्तक

—लेखकों की कलम से

अनुक्रम

[illegible] v
1. [illegible] 1
2. [illegible] 15
3. [illegible] 26
4. [illegible] 33
5. [illegible] 63
6. [illegible] 71
7. [illegible] 87
8. [illegible] 98
9. [illegible] 110
10. [illegible] 132
11. [illegible] 152
12. [illegible] 167
13. [illegible] 174
14. [illegible] 192
15. [illegible] लैंगिक भेदभाव 204
16. [illegible] पहचान का निर्माण 229

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
[illegible], ललितपुर (उ०प्र०)

शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार

राम प्रताप विश्वकर्मा
(एम.एस.सी. वनस्पति विज्ञान, एम.एड.)
(असिस्टेंट प्रोफेसर)
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजूकेशन
महर्रा, ललितपुर

एवं

राजेश कुमार यादव
(एम.ए. अर्थशास्त्र, एम.एड.)
(असिस्टेंट प्रोफेसर)
आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजूकेशन
महर्रा, ललितपुर

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
महरा, ललितपुर (उ०प्र०)

समकालीन प्रकाशन
दिल्ली - 110054

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन

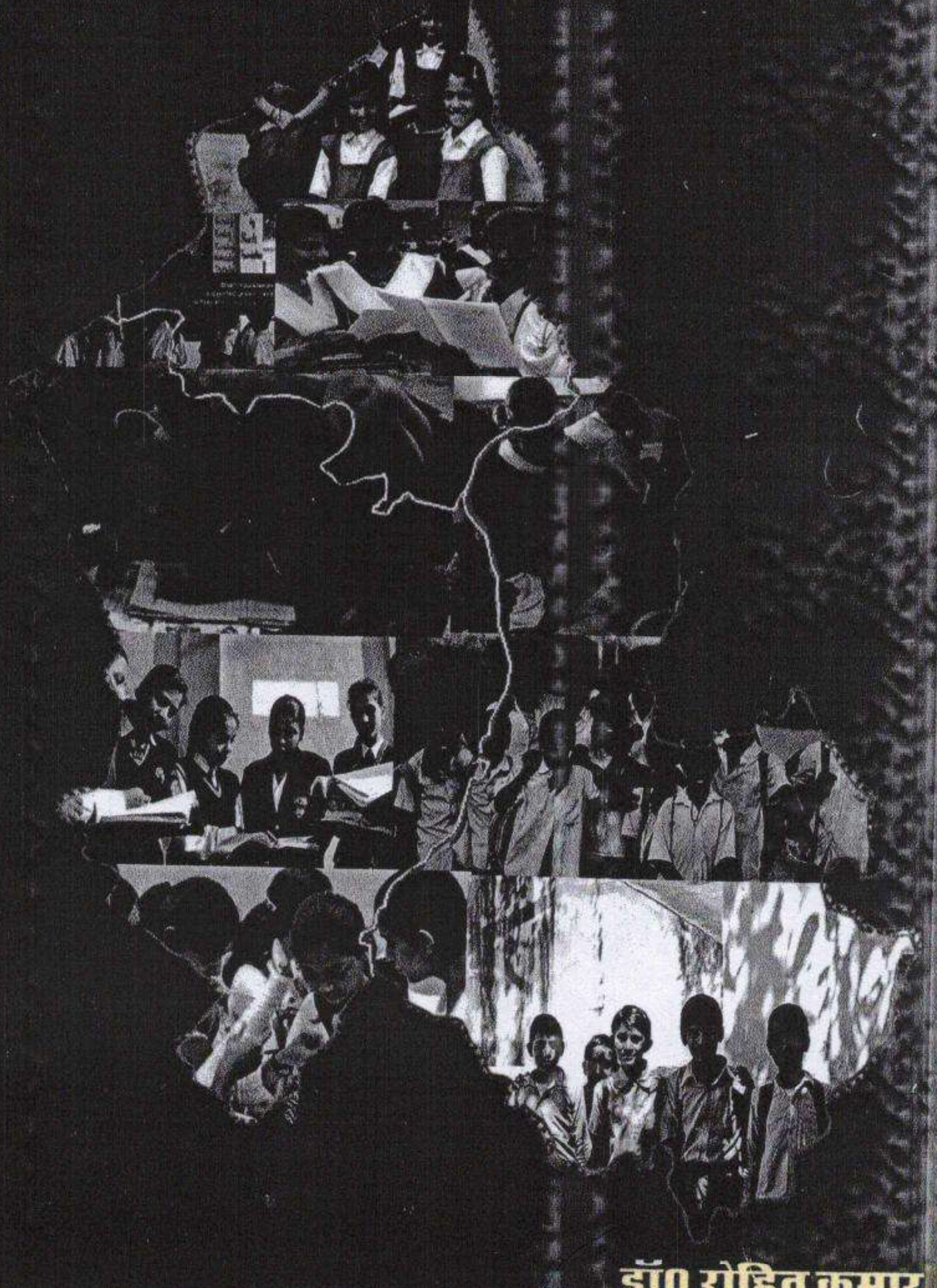

डॉ० रोहित कुमार

प्राचार्य
ललितपुर (उ०प्र०)

Copyright © 2020 by Rohit Kumar

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its copyright holder indicated above.

ISBN: 978-93-88660-80-8
Price: ₹ 253.00

Publishing Year 2019

Published and Printed by:
Sankalp Publication
Head Office: Ring Road 2 Gaurav Path, Bilaspur,
Chhattisgarh – 495001
Phones: +91 9111395888 +91 9111396888
Email: support@sankalppublication.com
Website: www.sankalppublication.com

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों, व्यक्तित्व गुणों, एवं मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. रोहित कुमार
(Ph. D, U.G.C. Net M.A. Hindi, P.G.D.C.A, M.Ed, B.Ed,)

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
मड़ावरा, ललितपुर (उ०प्र०)

संकल्प

Certificate

It gives me immense pleasure in certifying that the thesis entitled **"A COMPARATIVE STUDY OF RURAL AND URBAN STUDENTS' WITH RESPECT TO ACADEMIC ACHIEVEMENT, PERSONALITY AND VALUE ON SECONDARY LEVEL"** submitted by **Mr. ROHIT KUMAR** is based on the research work carried out under my guidance. She has completed the following requirements as per Ph.D. regulations of the University

(a) Course work as per the University rules
(b) Residential requirements of the University
(c) Regularly submitted six monthly progress report
(d) Published minimum of two research papers in a referred research journal.

I recommend the submission of thesis.

Date :

(DR. RAJESH SAKORIKAR)

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
मड़ावरा, ललितपुर (उ०प्र०)

अनुक्रमणिका

अध्याय	विवरण	पृष्ठ सं॰
प्रथम–अध्याय	अनुसंधान आकल्प	1
द्वितीय–अध्याय	सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन	17
तृतीय–अध्याय	शोध विधि, प्रविधि एवं उपकरण	41
चतुर्थ–अध्याय	दत्त संकलन सारणीयन, विश्लेषण एवं व्याख्या	61
पंचम–अध्याय	सिंहावलोकन, निष्कर्ष एवं भावी अनुसंधान हेतु सुझाव	112
	सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	130

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
महरा, ललितपुर (उ०प्र०)

(13)

स्वतत्रंता के पश्चात भारत में

गठित शिक्षा आयोग

एवं उनकें सुझाव

डा. रोहित कुमार

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
मड़ावरा, ललितपुर (उ०प्र०)

स्वतत्रंता के पश्चात भारत में

गठित शिक्षा आयोग

एवं उनकें सुझाव

डा.रोहित कुमार

(Ph.D., U.G.C.Net, M.Ed.,

B.Ed., M.A. Hindi, P.G.D.C.A.)

H.S.R.A PUBLICATIONS

No. 2,sri Annapoorneshwari Nilaya, 1st Main,
Byraveshwara Nagar, Laggere, Bangalore - 560058,
Ph: 7892793054,
Email : hsrapublications@gmail.com
www.hsrapublications.com

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
मड़ावरा, ललितपुर (उ०प्र०)

Published by

HSRA Publications 2020
#02, Sri Annapoorneshwari Nilaya, 1st Main,
Byraveshwara Nagar, Laggere,
Bangalore – 560058

Sales Headquarters – Bangalore

Copyright © DR. ROHIT KUMAR 2020

This book has been published with all reasonable efforts taken to make the material error-free after the consent of the respective authors. No part of this book shall be used, reproduced in any manner whatsoever without written permission from the editors, except in the case of brief quotations embodied in critical articles and reviews. The Authors of the respective chapters of this book is solely responsible and liable for its content.

All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced, transmitted or stored in any digital or Electronic form . Also photocopying, recording or otherwise without the prior permission of the editor and publisher is strictly prohibited.

ISBN : 978-81-947608-0-1

First Edition 2020

No. of Pages - 104

₹ 150.00

भूमिका

कहा जाता है कि मुश्किल समय में अवसर भी छिपे होते है बस आवश्यकता है एक सकारात्मक सोच और प्रयास की। आजादी के पश्चात भारत के सामने भी अनेक चुनौतियां और मुश्किल समय था । इसी समय को अवसर समझकर आगे बढना था। इसके लिये आवश्यकता थी एक शिक्षित समाज की जो आगे बढते भारत के लिए सबसे बड़ी चुनौती थी। इसके लिए भारत सरकार ने समय समय नयी शिक्षा नीतियां बनाई और समय समय पर उनमे परिवर्तन भी किये। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात सन् 1948 में डॉ.राधाकृष्णन की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग सन् 1952 में डॉ. मुदालियर की अध्यक्षता में माध्यमिक शिक्षा आयोग तथा सन् 1964 में डॉ.कोठारी की अध्यक्षता में शिक्षा आयोग का गठन किया गया। सन 2017 मे के.कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में एक आयोग का गठन किया गया जिन्हाने 2019 में नई शिक्षा नीति का मसौदा तैयार किया और 2020 , अगस्त को केन्द्रीय समिति ने इस पास कर दिया। इस पुस्तक में मेरे द्वारा सभी आयोगों एवं उनके सुझावों को संग्रहित करने का प्रयास किया गया है इस पुस्तक से पाठको को एक ही पुस्तक मे अब तक भारत में शिक्षा के लिए गठित आयोगों की जानकारी मिल सकेगी एवं शिक्षक शिक्षा में संचालित कोर्सो के पाठ्यक्रम में भी इसका महात्वपूर्ण उपयोग हो सकेगा।

हमें आशा ही नही वरन पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक विभिन्न विश्वविद्यालय ,कालेज एवं पाठकों की पूर्ति करेगी । किन्तु फिर भी यदि उनको कोई आभाव महसूस हो तो उनके सुझावों को सहर्ष स्वीकार किया जायेगा।

लेखक
डा.रोहित कुमार

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुके...
...ा, ललितपुर (उ०प्र०)

सारांश

स्वतंत्रता के पश्चात शिक्षा को राष्ट्रीय स्वरूप देनें का प्रयास किया गया। शिक्षा व्यवस्था को नई परिस्थितियों के अनुरूप बनानें के लिए अनेक परिवर्तनों की घोषणा की गई। विभिन्न स्तरों पर शिक्षा के विकास व विस्तार के प्रयास किये गये, प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य व निःशुल्क बनाने का संकल्प लिया गया, माध्यमिक शिक्षा को बहु–उद्देशीय बनाने पर विचार किया गया, तथा विश्वविद्यालयीन शिक्षा के स्तर में सुधार करने का प्रयत्न किया गया। इसके अतिरिक्त पिछड़े वर्ग, अनुसूचित जाति व जनजाति तथा महिलाओं की शिक्षा के विकास पर विशेष जोर दिया गया। विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948–49), माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53) तथा राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (1964–66) का गठन किया गया। शिक्षा आयोग ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के निर्माण की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि भारत सरकार को राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सम्बन्ध में एक वक्तव्य जारी करना चाहिए जिससे राज्यों तथा स्थानीय निकायों को अपने–अपने क्षेत्रों में शैक्षिक योजनाओं को बनाने तथा क्रियान्वित करने के लिए मार्ग दर्शन मिल सके। आयोग ने सरकार से राष्ट्रीय शिक्षा अधिनियम पारित करने की सम्भावना पर भी विचार करने के लिए कहा। सन् 1968 में प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा नीति की घोषणा की गई तथा सन् 1986 में नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रस्तुत की गई जिसमें कतिपय संशोधन 1992 के कार्यक्रम योजना में किये गये। 2017 मे के.कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में एक आयोग का गठन किया गया जिन्हाने 2019 में नई शिक्षा नीति का मसौदा तैयार किया और 2020 , अगस्त को केन्द्रीय समिति ने इस पास कर दिया।

सर्व शिक्षा अभियान का मुख्य लक्ष्य प्रारंभिक शिक्षा का लोकव्यापीकरण करना था। सर्व शिक्षा अभियान के द्वारा प्रारंभिक स्तर की शिक्षा में सफलता एवं व्यापक माध्यमिक शिक्षा की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान की शुरूआत सन् 2009 से की गई जिसका लक्ष्य 2020 तक माध्यमिक शिक्षा की सर्वव्यापक पहुंच एवं ठहराव सुनिश्चित करना है।

लेखक के बारे में

डा. रोहित कुमार वर्तमान मे भगवान आदिनाथ कालेज ऑफ एजूकेशन महरौ ललितपुर के बी.एड. विभाग मे असिस्टेंट प्रोफसर के पद पर कार्यरत है। उन्होनें अपनी शिक्षा अपने गृह जनपद जिला ललितपुर एवं उच्च शिक्षा डा. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर म.प्र.से की पूरी की है। उन्होनें डॉक्टरेट की उपाधि पैसीफिक विश्वविद्यालय उदयपुर राजस्थान् से प्राप्त की है । जून 2019 मे यू.जी.सी. नेट परीक्षा शिक्षा शास्त्र में उत्तीर्ण की । इन्होने चार विषयों मे परास्नातक उपाधि प्राप्त की है। पिछले 8 वर्षो से उच्च शिक्षा मे शिक्षण कार्य से जुडे है। लेखन क्षेत्र में ये प्रतिभा के धनी है अभी तक इनके 20 से अधिक शोधपत्र एवं लेख देश के विभिन्न जर्नल्स मे प्रकाशित हो चुके है । इन्होने 20 से अधिक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार्स में अपने शोधपत्र प्रस्तुत कर चुके है। यह पुस्तक उनके द्वारा लिखित तीसरी पुस्तक है । शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र मे यह अपना विशिष्ट स्थान रखते है।

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
महरा, ललितपुर (उ०प्र०)

विषय सूची

1. प्रस्तावना 1
2. राधाकृष्णन आयोग.. 5
3. माध्यमिक शिक्षा आयोग..15
4. भारतीय शिक्षा आयोग (कोठारी कमीशन).........................21
5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 1968 37
6. राष्टीय शिक्षा नीति 1986..44
7. राष्ट्रीय शिक्षा नीति मे संशोधन 1992 51
8. राष्ट्रीय पाठ्चर्या 2005 58
9. सर्व शिक्षा अभियान (SSA)...76
10. नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 81

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
महरौनी, ललितपुर (उ०प्र०)

अंग्रेजी शासन काल में भारत में शिक्षा का प्रसार

डॉ. रोहित कुमार

प्राचार्य
ऑफ एजुकेशन
(उ0प्र0)

अंग्रेजी शासन काल में भारत में शिक्षा का प्रसार

लेखक
डा0 रोहित कुमार
पी0एच0डी0 शिक्षाशास्त्र, यू0जी0सी0 नेट, एम0एड0, एम0ए0 हिन्दी, अंग्रेजी, अर्थशास्त्र, पी0जी0डी0सी0ए0
(Assistant Profesor Bhagwan Aadinath College of Education, Lalitpur)

BFC PUBLICATIONS

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कालेज ऑफ एजुकेशन
महरौनी, ललितपुर (उ0प्र0)

BFC PUBLICATIONS

प्रकाशक:
BFC Publications Private Limited
CP -61, Viraj Khand, Gomti Nagar,
Lucknow – 226010

ISBN - 978-93-90478-46-0

कॉपीराइट (c) - **डॉक्टर रोहित कुमार** (2020)
सभी अधिकार सुरक्षित।

प्रकाशक की अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी भाग की न तो प्रतिलिपि बनाई जा सकती है, न पुनरूत्पादन किया जा सकता है और न ही फोटोकॉपी और रिकॉर्डिंग सहित किसी भी माध्यम से अथवा किसी भी माध्यम में, किसी भी रूप में प्रेषित या पुनः प्राप्ति के उद्देश्य से संरक्षित किया जा सकता है। कोई भी व्यक्ति जो इस कार्य के प्रकाशन के संबंध में कोई भी अनधिकृत कार्य करता है, क्षति के लिए कानूनी कार्यवाही और नागरिक दावों के लिए उत्तरदायी हो सकता है।

इस पुस्तक में व्यक्त किए गए विचार और प्रदान की गई सामग्री पूरी तरह से लेखक की है और प्रकाशक द्वारा सद्भाव में प्रस्तुत की गई है। सभी नाम, स्थान, घटनाएं और घटनाक्रम या तो लेखक की कल्पना की उपज हैं या काल्पनिक रूप से उपयोग की गई है। कोई भी समानता विशुद्ध रूप से संयोग है। लेखक और प्रकाशक इस पुस्तक की सामग्री के आधार पर पाठक द्वारा की गई किसी भी कार्रवाई के लिए जिम्मेदार नहीं होंगे। इस कार्य का उद्देश्य किसी भी धर्म, वर्ग, संप्रदाय, क्षेत्र, राष्ट्रीयता या लिंग की भावना को ठेस पहुंचाना नहीं है।

लेखक परिचय

डा0 रोहित कुमार वर्तमान में भगवान आदिनाथ कालेज ऑफ एजूकेशन महर्रा ललितपुर के बी0एड0 संकाय में असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत है। वे भगवान आदिनाथ कालेज ऑफ एजूकेशन महर्रा ललितपुर के नैक कमेटी के प्रमुख्य एवं आई0 क्यू0 ए0 सी0 के प्रमुख पद पर भी अपनी सेवायें दे रहे है। डा0 रोहित कुमार का जन्म उत्तर प्रदेश के ललितपुर जिले के जैन परिवार में श्रीमती मीरा देवी, चम्पालाल सिंघई के तीसरे पुत्र के रूप मे हुआ। उनकी इण्टरमीडीएट तक की शिक्षा ललितपुर में ही सम्पन्न हुई। उच्च शिक्षा मध्यप्रदेश, छत्तीशगढ के लिए गये। उन्होनें शिक्षा स्नातक बी0एड0, एम0एड0 के पश्चात एम0ए0 हिन्दी, अंग्रेजी, अर्थशास्त्र, के साथ साथ कम्प्यूटर में पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा किया। 2018 में उन्होने अपनी पी0एच0डी0 पूर्ण की और 2019 जून में उन्होने यू0जी0 नेट शिक्षाशास्त्र में उत्तीर्ण किया। पिछले 8 वर्षो से वे उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अध्यापन का कार्य कर रहे है। अभी तक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जनरल्स में 20 से अधिक शोध पत्र एवं लेख प्रकाशित हो चुके। उन्होने देश के विभिन्न स्थानो पर आयोजित राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार और कार्यशालाओं में प्रतिभाग किया और अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये। यह लेखक डा0 रोहित कुमार की चौथी पुस्तक प्रकाशित हो रही है। उनके द्वारा लिखी पुस्तक **हिन्दी शिक्षण** उत्तर प्रदेश के डी0एल0एड0 के पाठ्यक्रम में पढाई जाती है। उनकी अन्य पुस्तकें– **हिन्दी शिक्षण**, ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन, स्वतंत्रता के पश्चात भारत में गठित शिक्षा आयोग एवं उनके सुझाव है। डा0 रोहित कुमार को बंगलौर की एक संस्था द्वारा 2020 में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक के अवार्ड से पुरुस्कृत किया गया है।

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कालेज ऑफ एजुकेशन
महर्रा, ललितपुर (उ0प्र0)

भूमिका

भारत सदियों से बाहरी आकमणों और आतातयियों से जूझता रहा है। विश्व में औद्योगिक क्रांति के परिणाम स्वरूप विश्व के शक्तिशाली और समक्ष देश अपने उत्पादों के लिए नये बाजार की तलाश में थें। परिणाम स्वरूप पुर्तगाली, डच, फ्रांसीसी, अंग्रेज भारत में अपने व्यापार के विस्तार के उद्देश्य से भारत में आये और धीरे धीरे अपना साम्राज्य स्थापित करना प्रारम्भ किया। अंग्रेजों की ईस्ट इंडिया कम्पनी अपना साम्राराज्य स्थापित करने में कामयाब रही।- 1600 से 1857 तक कम्पनी ने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से भारत में राज्य किया। तद्पश्चात सत्ता इंग्लैण्ड की संसद के हाथ में आ गई। अपने साम्राज्य को भारत में सफलता पूर्वक संचालन के लिए कम्पनी सरकार और इंग्लैण्ड सरकार ने भारत में विकास के कार्य करना प्रारम्भ किया। इसी क्रम में भारत में शिक्षा की जिम्मेदारी कम्पनी सरकार ने तथा अंग्रेजी सरकार ने लेना स्वीकार किया। शिक्षा के प्रचार और प्रसार के लिए अंग्रेजी सरकार ने शिक्षा का सर्व उपयुक्त कार्य अंग्रेजी माध्यम माना और भारत मे अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्रदान करने का शंखनाद किया। अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्रदान करने के लिए लार्ड मैकाले ने नीति तैयार की और उसे विलयम बैटिंग ने इसे सन् 1835 में लागू किया। यही से आधुनिक भारत में औपचारिक शिक्षा का शंखनाद हुआ। ऐसा नही है कि इससे पहले भारत में शिक्षा प्रदान करने की कोई व्यवस्था नही थी। भारत में इससे पूर्व संस्कृत, फारसी, उर्दू, बंगाली और हिन्दी में शिक्षा प्रदान की जा रही थी। इनके लिए पाठशालायें, मदरसा, मकतव और आश्रम थे। परन्तु अब स्कूलों का निमार्ण किया गया और शिक्षा के विभिन्न मानक स्तर तय कर प्राथमिक विद्यालय, माध्यमिक विद्यालय, कालेज और विश्वविद्यालयों का निमार्ण किया गया। ये आधुनिक भारत के शिक्षा प्रदान करने के केन्द्र बनाये गये। भारत में शिक्षा के प्रसार का स्वरूप बनाने और उसे संचालित करने के लिए अंग्रेजी सरकार ने समय समय पर आयोगों का गठन किया और उनके द्वारा दिये गये सुझावों को लागू भी किया गया। सन् 1803 से भारत में शिक्षा प्रदान करने के लिए अंग्रेजी सरकार ने काम करना प्रारम्भ किया और 1947 तक निरन्तर प्रयास करते रहे। मेरी इस पुस्तक में अंग्रेजों के शासन काल में अंग्रेजों के द्वारा भारतीयों का शिक्षा प्रदान करने के लिए जिन आयोगों का गठन किया गया उनके बारे में एवं उनके द्वारा दिये गयें सुझावों के बारे में मेरे द्वारा लिखा गया।

मैने पूरी कोशिश की है कि मेरे द्वारा शिक्षा के लिए अंग्रेजों के द्वारा किये गये प्रयासों का कोई भी अंग न छूटे। मेरी पुस्तक शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम जैसे बी0एड0, डी0एल0एड0, डी0एड0 आदि पाठ्यक्रमों मे प्रशिक्षुओं के अध्ययन में सहायक होगी। मै आशा करता हूँ कि मेरे द्वारा लिखी गई इस पुस्तक से किसी की भावनाओं को ठेस नही पहुचेगी।

मैं अपने सभी मित्रों साथियों का मन से आभार प्रकट करता हूँ जिनकी शुभकामनायें मेरे साथ रही। मै अपने माता पिता श्रीमती मीरा देवी, चम्पालाल सिंघई का वंदन करता हूँ जिन्होनें मुझे इस लायक बनाया।

लेखक
डा0 रोहित कुमार
(Assistant Profesor Bhagwan Aadinath College of Education, Lalitpur)
पीएच0डी0 शिक्षाशास्त्र, यू0जी0सी0 नेट, एम0एड0, एम0ए0 हिन्दी, अंग्रेजी, अर्थशास्त्र, पी0जी0डी0सी0ए0।

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
मड़ौरा, ललितपुर (उ0प्र0)

विषय सूची

अध्याय–1 भारत में मिशनरियों द्वारा शिक्षा का प्रसार 9-11
डच मिशनरी, डेन मिशनरी, फ्रांसीसी मिशनरी, पुर्तगाली मिशनरी, अंग्रेजी मिशनरी, ईस्ट इंडिया कम्पनी का भारत में प्रवेश एवं शिक्षा के क्षेत्र में कार्य।

अध्याय–2 भारत मे ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा शिक्षा प्रदान करने का प्रयास 12-15
भारत में अंग्रेजी शिक्षा का उदय, प्राच्य– पाश्चात विवाद।

अध्याय–3 लार्ड मैकाले का शिक्षा विवरण पत्र। 16-22
लार्ड टामस बैबिंगटन मैकाले का परिचय, मैकाले का विवरण पत्र, निस्यंदन सिद्वांत, लार्ड विलयम बैटिंग द्वारा मैकाले विवरण पत्र को स्वीकृति 1835, आकलैण्ड का विवरण पत्र एवं प्राच्य– पाश्चात्य विवाद का अंत।

अध्याय–4 शिक्षा प्रसार के लिए किये गये सर्वेक्षण 23-30
मद्रास का सर्वेक्षण, बम्बई प्रोविन्यिस का सर्वेक्षण, एडम रिर्पोटस– एक शिक्षक एक स्कूल, एडम की प्रथम रिर्पोट, एडम की द्वितीय रिपोर्ट, एडम की तृतीय रिपोर्ट।

अध्याय–5 आज्ञा पत्र 1833 31-33
आज्ञा पत्र 1833, ईस्ट इंडिया कम्पनी के प्रशासनिक परिवर्तन, ईस्ट इंडिया कम्पनी के भारतीय शासन में परिवर्तन।

अध्याय–6 वुड घोषणा पत्र 34-38
वुड घोषणा पत्र, भारतीय शिक्षा के लिए वुड घोषणा पत्र की सिफारिशें।

अध्याय–7 वुड घोषणा पत्र के परिणाम 39-42
वुड घोषणा पत्र के परिणाम, स्टैनले का आदेश पत्र।

अध्याय–8 भारतीय शिक्षा आयोग (हण्टर कमीशन 1882–83) 43-58
भारतीय शिक्षा आयोग (हण्टर कमीशन 1882–83), भारतीय शिक्षा आयोग की नियुक्ति का कारण, आयोग के गठन का उद्देश्य, भारतीय शिक्षा आयोग की सिफारिशें एवं उनके सुझाव, सहायता अनुदान प्रणाली, हण्टर आयोग की सिफारिशो के परिणाम स्वरूप भारत में प्राथमिक शिक्षा में प्रगति।

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
मड़ावरा, ललितपुर (उ०प्र०)

अध्याय –9 भारतीय विश्व विद्यालय आयोग 1902 59-66

शिमला शिक्षा सम्मेलन, भारतीय विश्वविद्यालय आयोग का गठन, शिक्षा नीति संबन्धी सरकारी प्रस्ताव 1904, भारतीय विश्वविद्यालय आयोग के गठन का कारण लार्ड कर्जन का भारतीय शिक्षा में योगदान, प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य बनाने के प्रयास, बडौदा नरेश सायाजीराव गायकवाड का प्रयास, प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य और निःशुल्क के लिए गोपाल कृष्ण गोखले का प्रयास।

अध्याय–10 गोखले का प्रस्ताव एवं विधेयक 67-72

गोखले का प्रस्ताव, गोखले विधेयक, सरकारी शिक्षा नीति प्रस्ताव 1913।

अध्याय–11 कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग 1917 अथवा सैडलर आयोग 73-77

कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग के गठन के कारण, कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग की सिफारिशें, भारतीय विश्वविद्यालय के सम्बन्ध में सामान्य सुझाव।

अध्याय–12 द्वैध शासन एवं द्वैध शासन में शिक्षा की प्रगति (1921 –1937) 78-82

द्वैध शासन प्रणाली, भारत में द्वैध शासन प्रणाली की स्थापना, द्वैध शासन प्रणाली मे शिक्षा।

अध्याय–13 हर्टांग समिति 83-91

हर्टांग समिति की रिपोर्ट, केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड, ऐबट और वुड रिपोर्ट 1937, जॉच समिति के गठन का उद्देश्य, एबर्ट और वुड रिपोर्ट।

अध्याय–14 बुनियादी शिक्षा या नई तालीम (वर्धा सम्मेलन) 92-101

वर्धा सम्मेलन की भूमिका, वर्धा शिक्षा– योजना, वर्धा शिक्षा योजना की रूपरेखा बुनियादी शिक्षा के उदेद्श्य।

अध्याय–15 सर्जेन्ट आयोग 1944 102-112

सार्जेन्ट रिपोर्ट, सार्जेण्ट आयोग की सिफारिशें, अंग्रेजी शासनकाल में भारत में शिक्षा।

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
महरौनी, ललितपुर (उ०प्र०)